आसमान को छू लें

लेखकः

सुरेश चौधरी 'इंदु'
एवं
कल्याण सिंह शेखावत

प्रकाशक

शुक्तिका प्रकाशन

ए & ए इंटरप्राइजेज की एक इकाई

ISBN: 978-81-948093-8-8
आसमान को छू लें (बाल गीत)
प्रकाशक :
शुक्तिका प्रकाशन
(ए & ए इंटरप्राइजेज की एक इकाई)
143D, शरत बोसे रोड,
कोलकाता 700 026
मो: 94324 19815
ई मेल: enterprisesaa2019@gmail.com

@ सर्वाधिकार लेखकाधीन

लेखक: सुरेश चौधरी 'इंदु एवं कल्याण सिंह शेखावत

(लेखक की अनुमति के बिना इस पुस्तक का या इसके किसी भी अंश का संक्षिप्त या परिवर्तित करके उधृत करना कॉपी राईट का उलंघन होगा)

मुद्रक:
मिश्का इन्फोटेक
साल्ट लेक
कोलकाता
फोन:033-4603 6333

मूल्य: २००/-

CHILDRENS POETRY BOOK BY SURESH CHOUDHARY"INDU"

दो शब्द

बाल मन को जानना और उसको समझना आसान नहीं है। कभी उछलना, कभी कूदना-फाँदना बालक की सहज क्रिया कलाप हैं। पल में रोना-मचलना और उसी पल खिलखिला कर हँस पड़ना। क्या कोई अपने आप को समझदार समझने या कहने वाला दो पाया जीव इसका कारण बता सकता है। शायद नहीं।

बालक की मनोदशा जानने के लिए बड़े या बुजुर्ग को बालक तो नहीं बाल मन होना जरूरी होगा। यह सामर्थ्य सब में हो, ऐसा संभव नहीं तो कठिन अवश्य है। मैं तो इसमें एकदम अक्षम था। बहुत बार सोचा नारी, दलित, आदिवासी ज्ञानियों के लिए लिखने वालों की कहीं भी, किसी भी भाषा में कमी नहीं है। आज कल पत्र-पत्रिकाओं में भी उपरोक्त विषयों पर चर्चा, लेख, कविता आदि छपते रहते हैं। पर बच्चों के लिए नाम मात्र।

हाँ, बुद्धू पिटारे (टीवी) पर अवश्य बालकों के लिए कुछ सामग्री अंग्रेजी, जापानी, चीनी या अन्य भाषाओं के क्षेत्रीय या हिंदी भाषा में डब करके परोसे जा रहे हैं। उनमें भारतीयता का नितान्त अभाव होता है और ये मात्र कल्पनाओं में भटकाते हैं।

ऐसे में भाई श्री सुरेश जी चौधरी के उकसावे पर मैंने भी कुछ कविताएँ, जो बाल मन को दर्शाएं तथा भाएं, लिखने का प्रयास किया। इन कविताओं में मेरे प्रयास नगण्य हैं। क्योंकि इनके लिए सारी सामग्री मुझे मेरी दोहितियाँ व दोहित्रों ने सहज ही उपलब्ध करायी है। हाँ, मुझे उनके बेमतलब के खेलों का भागीदार अवश्य बनना पड़ा। तब जाकर उनके क्रियाकलापों में अपने आप को समाहित करते हुए कुछ लिख पाया हूँ।

अच्छी-बुरी, खरी-खोटी कैसी बन पड़ी है। यह तो भविष्य के गर्भ में है।

अस्तु !!

बूढा-बालक

कल्याण सिंह शेखावत राजनौता

मेरे बाल गीत

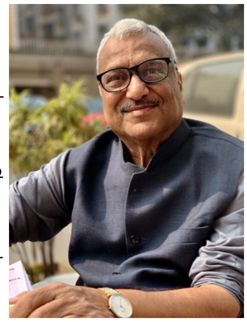

बालगीत के प्रेरणा स्त्रोत सदा बच्चे ही रहे हैं, उनकी अठखेलियाँ, उनका उत्साह, उनकी भावभंगिमायें हमें प्रभावित करती हैं और कविताओं की पंक्तियां बरबस ही निकल पड़ती हैं। पहला बाल गीत मैंने जब लिखा था तब सोचा भी नहीं था कि लोगो को पसंद आएगा, हावड़ा स्टेशन से गंगा पार कर कलकत्ता आ रहा था। सुबह सूर्योदय का समय था। मनोरम दृश्य था। निकलता सूरज ऐसा लग रहा था मानो गंगा की गोद से उछल कर बाहर निकल रहा हो। तभी एक गीत निकल पड़ा "लाल सूरज का गोला......" लिखना तो प्राकृतिक गीत चाहा था पर बन गया बाल गीत। फिर यूँ ही पोती से खेलते हुए कई गीत बन गए । कभी उसके जन्म दिन पर , कभी यूँ ही। इस तरह यह पिछले छः सात वर्षों में 20-25 रचनाएं लिखी पड़ी थी, तभी मित्र कल्याण सिंह जी शेखावत से भेंट हुई और अंतरंगता बढ़ती गयी उन्होंने कहा की कुछ बालगीत उनके भी है तब निर्णय लिया की दोनों के गीतों का संयुक्त प्रकाशन करना चाहिए। इस तरह इस पुस्तिका का जन्म हुआ।

आशा है पुस्तक बाल सुलभता के साथ कुछ संदेश भी दे सकेगी जिससे नौनिहालों के चरित्र निर्माण में सहायक होगी। मित्र संजीव जायसवाल "संजय" जी 'का एवं सविता पोद्दार जी का आभारी हूं जिन्होंने समीक्षा लिख हमारा उत्साहवर्धन किया।

नमन

सुरेश चौधरी "इंदु"-कोलकाता

बालमन को मोहती कवितायें

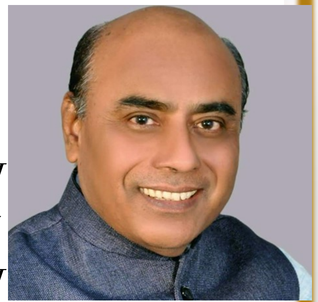

संजीव जायसवाल 'संजय' जी पूर्व निर्देशक आरडीएसओ लखनऊ हैं, इनकी कई चित्र रचनाओं का विश्व की सत्तर से ज्यादा भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। प्रख्यात कहानीकार, उपन्यासकार एवं बाल साहित्य के रचनाकार हैं जिन्हें अनेकों सम्मान से सम्मानित किया गया है।

देश के प्रथम देश के प्रथम प्रधानमंत्री, बच्चों के चाचा नेहरू कहा करते थे "मैं हैरत में पड़ जाता हूं जब लोग राष्ट्र का भवष्यि जानने के लिये नक्षत्रों और सितारों की बात करते हैं। अगर राष्ट्र का भविष्य जानना है तो नन्हे-मुन्नों की आँखों में देखो क्योंकि वे ही राष्ट्र के भावी कर्णधार हैं और उन्हीं के हाथों में राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित है।" कहावत भी है कि बच्चे कल का भविष्य होते हैं। जब बच्चे ही हमारा भविष्य हैं तो हमारी भी जिम्मेदारी बनती है कि हम अपने भविष्य को आज संवारें और उसे बिगड़ने न दें। लेकिन क्या आज के बाल साहित्यकार अपनी जिम्मेदारी को पूरा कर रहे हैं? क्या वे देश के भावी कर्णधारों को ऐसी कहानियां और साहित्य दे रहे हैं जो समय की कसौटी पर खरी उतरें और उन्हें एक अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा दे सकें? यह ऐसे प्रश्न हैं जिनके उत्तर हमें आज खोजने होंगे। यदि हमने ऐसा नहीं किया तो आने वाली पीढ़ियां और इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगें।

बच्चों के लिये कुछ लिखना एक चुनौती भरा कार्य है लेकिन कई बार विद्वजन जब एक उच्च कोटि के साहित्यकार के रूप में बाल साहित्य की रचना का सृजन करते हैं तो वह रचना बालसाहित्य की श्रेणी में न आकर कुछ और ही बन जाती है। विद्वता की अधिकता के कारण ऐसी रचनायें बालमन की परिधि से कहीं दूर चली जाती हैं। दरअसल बच्चों के लिये कुछ लिखने के लिये पहले बच्चा बनना होगा। बालमन के धरातल पर उतर कर उन्हीं की तरह सोचना होगा क्योंकि बच्चों के मन की भावनायें और उनकी जिज्ञासायें उन भावनाओं और जिज्ञासाओं से भिन्न होती हैं जो एक प्रोढ व्यक्ति के मन की होती हैं। यदि हमने ऐसा नहीं किया तो हम एक बाल-साहित्यकार के धर्म का पालन नहीं कर पायेंगे। अब प्रश्न यह उठता है कि कितने बाल-साहित्यकार ऐसे हैं जो इस धर्म का पालन कर रहे हैं? शायद गिनती के ही साहित्कार ऐसे हैं जो सच्चे अर्थो में बाल साहित्य का सृजन कर रहे हैं।

ऐसे में वरिष्ठ साहित्यकार सुरेश चैधरी जी और भाई कल्याणा सिंह शेखावत एक नई रौशनी और उम्मीद लेकर सामने आये हैं। इन दोनों के संयुक्त प्रयासों के रूप में एक नया कविता संग्रह' सामने आया है। इस संग्रह की सभी कवितायें बाल मनोभावों का प्रतितिधत्व तो करती ही हैं, साथ ही वे एक नये प्रयोग के रूप में सामने आई हैं। अभी तक एक से अधिक लेखकों के संयुक्त उपन्यास, कहानी संग्रह और फिल्में देखने को मिलती रही हैं लेकिन दो रचनाकारों के सम्मितलित प्रयास से पहला बाल कविता संग्रह देखने का अवसर मुझे मिला है।

यह दोनों कवि एक और एक मिलकर दो नहीं बल्कि ग्यारह हो गये हैं। निश्चित रूप से इन दोनों ने एक दूसरे की कविताओं का सम्पादन और परिमार्जन किया होगा तभी इस संग्रह की सभी कविताओं का मनोहरी रूप उभर कर सामने आया है जो अनायास ही बच्चों का मन मोह लेता है।

बच्चों की दुनिया बड़ों से अलग होती है और उनकी कल्पनायें भी अलग होती है। किन्तु ज्यादातर वे अपनी कल्पनाओं में उन्हीं चीजों का संसार रचते हैं जिन्हें उन्होंने अपने आस-पास देखा होता है। इन दोनों रचनाकारों की इस बात की प्रसंशा करनी होगी कि उन्होंने सभी कवितायें बच्चों के आस-पास की विषय वस्तुओं से उठाई हैं। इसी वजह से बच्चे उनसे एक प्राकृतिक जुड़ाव महसूस करेगें। बिल्कुल उनके करीब की दुनिया, जैसा वे चाहते हैं, जैसा वे सोचते हैं बिल्कुल वैसा ही संसार समाया है इस अनुपम कृति में। यह जुड़ाव शुरू हो जाता है संग्रह की पहली कविता की पहली पंक्ति से ही। उसकी बानगी देखिये:

चांदी सी चमकती चांदनी रात में, खेलने मेरी परी के साथ में
आज जमीन पर उतरा चांद हैं, शरारत है कैसी कूद फांद में।'

संग्रह की ये कविताये एक तरफ अद्भुत कल्पना लोक की सैर कराती हैं तो दूसरी तरफ जीवन में आगे बढ़कर कुछ करने का हौसला भी जागृत करती हैं। ऐसी ही एक श्रेष्ठ कविता है "आकाश को चूम लेंः-

"आ हम बढ़ चलें, आकाश को चूम लें,
जमीन पर झूम लें, कदम नाप घूम लें।"

इसी के साथ बच्चों को गुदगुदाने, उनमें हंसी की फुलझड़ी छुड़ाने वाली भी कई कवितायें हैं जिन्हें पढ़ कर बच्चे अनायास ही प्रफुल्लित हो उठते हैं और एक के बाद एक कविता पढ़ते चले जाएगें। जैसे:

'चलें बनठन कर शहर को, भालू जी चाट खाने को।
एक नहीं-दो चार नहीं, लेकर रूपये पूरे आठ,
बंदर जी की दुकान पर देखो इनके ठाठ।"

शायद ही कोई ऐसा विषय हो जिन पर इन कवियों की लेखनी न चली हो। परिवार के सदस्य, खेल - खिलौने, रेलगाड़ी, जीव-जंतुओं से लेकर प्रकृति तक पर इनकी लेखनी ने पूरे मनोयोग से कागज पर रंगीन चित्र उकेरे है। ऐसी ही एक कविता बरखा बहुत प्रभावित करती हैः-

'बरखा आयी, बरखा आयी, रिमझिम करती बरखा आयी,
गांव में शहरों में रिमझिम, खेतों मे बागों में झमझम,

प्रकृति के साथ-साथ बच्चों को आसमान में चमकने वाले सूरज-चांद-तारे भी बहुत पसंद आते हैं। इन्हें जीता -जागता पात्र समझकर वे नई-नई कल्पनायें करते रहते हैं। बाल साहित्य से जुड़े लगभग सभी बड़े

रचनाकारों ने चांद-तारों को केन्द्र में रखकर कई कहानियां और कवितायें लिखी हैं जो बच्चों में काफी लोकप्रिय भी हुई हैं। इस संग्रह में भी इन विषयों पर कई कवितायें हैं जिनमें से प्रमुख है चंदा-तारे' जो बरबस ही मन मोह लेती हैः-

"रात-रात भर जाग-जाग कर, पहरा देते मिलकर तारे,
आसमान में टिम-टिम करते, छोटे-छोटे कितने तारे।"

ग्लोबल वार्मिंग और बढ़ता हुआ प्रदूषण आज विश्वव्यापी समस्या बन गया है जिसका निदान खोजने के लिये सभी देश प्रयासरत हैं लेकिन सफलता दिवास्वप्न साबित हो रही है। ऐसे में आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों को प्रारंभ से ही इस बढ़ते हुये खतरे के प्रति आगाह किया जाये और उनमें प्रयार्वरण संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जाये । इस संग्रह की कवितायेँ इस सामाजिक जिम्मेदारी को भी पूरा करने में सफल रही हैं। एक कविता 'तुम कहां छुपे हो' इस दिशा में एक अनूठा प्रयास है जिसके लिये रचनाकार की जितनी भी प्रसंशा की जाये वह कम है। वे कहते हैः-

"चिड़ी, कबूतर, तोता, तीतर, इधर-उधर सब ढूंढे पानी,
पीहू-पीहू की रटन आजकल, सुने नहीं मयूरा की वाणी,
उड़े हवा संग रेत हठीली, सूख गए सब नदियां नाले,
गांव, खेत, खलिहान नगर को, भूल गए बादल मतवाले।"

इस संग्रह की सभी कवितायें मनोरंजन के साथ-साथ जागरूकता का कोई न कोई संदेष भी लिए हुये हैं। इन्हें पढ़ने से बच्चों को एक अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा अवष्य मिलेगी। कल्पना की उंची उड़ान के साथ-साथ यथार्थ का सम्मिश्रण, मानवीय संवेदनाओं-मनोभावों और अनुभूतियों के साथ अनुभव का खजाना इस संग्रह को नयी उंचाईयां प्रदान करता है । अपनी मनमोहक षैली, सरस भाशा और ताज़गी के कारण इस अनुपम कृति को पढ़ना एक सुखद यात्रा के समान लगता है। संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता इसके खूबसूरत रंगीन चित्र हैं। हर कविता के साथ उसके विषय-वस्तु का प्रतिनिधत्व करते हुये बहुत ही खूबसूरत चित्र हैं जिन्हें देखकर बच्चे उनकी ओर अवश्य आर्कषित होंगे। मुझे विष्वाष है कि सुरेश चौधरी और कल्याण सिंह शेखावत जी की लेखनी से ऐसी श्रेष्ठ कृतियों का निरन्तर सृजन होता रहेगा जो बाल साहित्य के आकाश को समृद्ध करती रहेंगी । मैं उनके इस कविता संग्रह की सफलता की मंगल कामना करता हूं।

संजीव जायसवाल 'संजय'
राजाजीपुरम , लखनऊ ,मो0 7318213943

सविता पोद्दार

९८३१५९०५४०

आकाशवाणी कोलकाता की उद्घोषिका प्रख्यात कवयित्री एवं समीक्षक

बचपन-बाल कवितायेँ

बाल साहित्य परम्परा ने न सिर्फ हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है बल्कि विश्व में जितनी भी भाषाएँ बोली ,पढ़ी और लिखी जाती हैं उन सभी भाषाओं में बाल साहित्य ने अपनी उपस्थिति दर्ज़ कराई है। बच्चे कल की दुनिया की नींव हैं , देश का भविष्य हैं। बाल साहित्य बच्चों के मन को रंजित करते हुए , उनके सर्वांगीण विकास की आधार भूमि तैयार करता है ,खेल - खेल में कविताओं, कहानियों एवं नाटकों के माध्यम से वह दुनिया से परिचित हो जाता है , अपने आस- पास कल्पनाओं की सतरंगी दुनिया बना लेता है । कोमल भावनाओं , संवेदनाओं के गहरे सागर में गोते लगाने लगता है । अपनी मासूम चंचलता ,चपलता में उलझ जाता है और खुद ही बाहर निकल आता है। सकारात्मक उर्जा के साथ बाल - साहित्य जिज्ञासा के पहाड़ पर भी चढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

प्यार के रस से सींचती कल्पनाओं के पंख लगाकर एक अलग लोक में ले जाती वरिष्ठ व सुप्रसिद्ध साहित्यकार आदरणीय श्री सुरेश चौधरी जी और आपके बंधुवर आदरणीय श्री कल्याण सिंह शेखावत राजनौता जी द्वारा रचित बाल कविताओं का संग्रह 'बचपन' नन्हें - नन्हें हाथों में आया है जो निश्चित रूप से बाल मन को मोह लेगा। ऐसा संयुंक्त प्रयास पहले नहीं हुआ ,यह नहीं कहा जा सकता लेकिन प्रंशसनीय अवश्य है।

"बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन है" यह सत्य तब उद्घाटित होने लगता है जब एक - एक कर इस संग्रह की कवितायों के जरिये पाठक कभी प्रकृति की अनुपम छटा का अवलोकन करने लगता है जैसे 'हुआ सवेरा' कविता की पंक्तिया देखिये -

छोड़ घोंसला बाहर आये,

एक दूजे से चोंच लड़ाए।

नयी सुबह का नया तराना ,

मधुर सुरों में सब मिल गाएं।।

तो कभी 'चिड़ियाघर' में जा कर शहरी जीवन की व्यस्तता में भी बच्चा विभिन्न जानवरों ,पशु -पक्षीयों के साथ घुल-मिल सकता है। 'ऊन ही ऊन' कविता अंग्रेज़ी कविता 'बा - बा ब्लेक शीप' का सुंदर हिंदी अनुवाद है ,हिंदी भाषी बच्चों को अंग्रेज़ी भाषा की ही कविता को पढ़ने की बाध्यता से बचाया गया है।

'गिनती' कविता के माध्यम से खेल - खेल में ही गिनती सिखाने की कोशिश की गयी है जो सीखने की प्रक्रिया में सरलता प्रदान करती है

यथा- एक दो ,

जूते की रस्सी कसो।

तीन चार

बंद कर सारे द्वार।

'आई रेल', 'छुक छुक रेल' कविताओं से बच्चों को ज़िन्दगी का फ़लसफ़ा समझाया गया है

जीवन का अद्भुत यह खेल

छुक- छुक करती आई रेल

जीवन चलने का है नाम

रेल बताती यह ही काम

'मुनिया' कविता में कवि आयुजनित बीमारियों की लाचारियों को मार्मिकता से दर्शाता है

मुनिया

तू बड़ी प्यारी

दादा की दुलारी

तेरा दादा बड़ा लाचार है

बन नहीं सकता तेरा घोड़ा

वह बहुत बीमार है

रंग-बिरंगे तोते के चित्रों के साथ रंग बिरंगे शब्दों में रचित कविता 'तोते आये' खूब आकर्षित करती है

तोते आये तोते आये

उड़ते उड़ते तोते आये।

'पर्व दिवाली','बच्चों की होली' कवितायेँ आज के आधुनिक, तकनीकी युग में पर्व ,उत्सवों से बच्चों को जोड़ने का प्रयास करती हैं , मूल्यों - परम्पराओं के संस्कार देने की कोशिश की है

नभ के तारों की महफ़िल में

पावन खुशियों की महफ़िल में

अपनापन भाव पिरोता है

तो पर्व दिवाली होता है

इस प्रकार बच्चों की मनःस्थिति को समझते हुए सरल, सरस भाषा में कविताओं को रच कर बादल- पानी , चाँद – तारों , खेल –खिलौनों , रिश्ते –नातों , जीव – जन्तुओं , प्रकृति आदि से जोड़ने के लिए चुलबुले , नटखट अंदाज़ में सार्थक प्रयास किया गया है यही पुस्तक की सफलता है। अंत में आदरणीय श्री सुरेश चौधरी "इंदु" जी व आदरणीय श्री कल्याण सिंह शेखावत राजनौता जी के इस संग्रहणीय संग्रह की सराहना करते हुए पुस्तक की सफलता की मंगलकामना करती हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि आपकी लेखनी यूँ ही सतत ऊंचाईयों को छूती रहे। बधाई व शुभेच्छाओं के साथ

धन्यवाद !

सविता पोद्दार

विषय-सूची

चाँदनी रात 12
लौटा बचपन 13
लो आज मेरी शानू एक साल की हो गयी 14
आकाश को चूम लें 15
लाल लाल सूरज 16
मेरी बुलबुल 17
मुनिया 18
सपनों में खो जाएँ 19
चिड़ियाघर 20
छोटे छोटे तारे 21
ऊन ही ऊन 22
सोनू-मोनू 23
गिनती 24
बिल्ली मौसी 25
छोटी भेड़ 26
टन-टन 27
बिल्ली रानी 28
बरसा 29
भोला हरिया 30
गुड़िया अलबेली 31
अगड़म बगड़म 32
इलाहाबादी 33
आई रेल 34
छुकछुक रेल 35
बरखा 36

अनमोल रचनाएँ

नंद गाँव में बदली कुटिया 38
चल अब शाला 39
तोते आए 40
भालू 41
बंदर आया 42
हुआ सवेरा 43
चंदा तारे 44
अपनी गुनगुन 45
पर्व दिवाली 46
हाथी आया 47
घर आंगन 48
उजली धूप 49
बच्चों की होली 50
मतदान 51
काले बादल 52
मेघ तुम कहाँ छुपे हो 53
बादल 54

चाँदनी रात

चाँदी सी चमकती चाँदनी रात में
खेलने मेरी परी के साथ में,
आज जमीन पर उतरा चाँद है,
शरारत है कैसी कूद फाँद है
संग झिलमिलाती तारों की बारात है
वाह क्या बात है।
वाह क्या बात है।

दूध की सफेदी लिए उजाले से नहाई
परी भी उतर आसमान से खेलने आई
जमीन की परी गगन-परी खेलें संग संग
चाँद तारें भी डोलें ले मस्ती की तरंग
खुशियों के रंगों से भर गयी सुनहरी रात है
वाह क्या बात है।
वाह क्या बात है।

लौटा बचपन

वह उछल कूद करती शोर मचाती
दादा-दादा कहती दौड़ी चली आती
नाच दिखाती सब का मन हर्षाती
कितनी प्यारी कितनी न्यारी मेरी गुड़िया !!

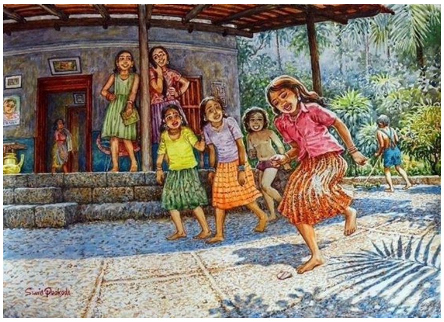

हाथी-घोड़ा, गुड्डा-गुड्डी खेल नही
अलग-अलग सी अन्य से मेल नहीं
भजन कीर्तन लगे प्यारा खेल नही
कितनी प्यारी कितनी न्यारी मेरी गुड़िया !!

मैं छोटा सा बच्चा बन जाता संग खेल
खोया बचपन भी लौट आता संग खेल
सहारा जीने का मिल जाता संग खेल
कितनी प्यारी कितनी न्यारी मेरी गुड़िया !!

लो आज मेरी शानू एक साल की हो गयी

आगे तो ठुमक-ठुमक चल कर बढ़-बढ़ आना
पीछे दादाजी के संग भजन पर ताली बजाना
चेहरा सुन्दर भोलाभाला खुशियों का खजाना
मन का दूर कर अन्धेरा उजियारा बन गयी
लो आज मेरी शानू एक साल की हो गयी ।।

सुबह सुबह आँखे खुलते ही कमल सी आती है
चहक सुबह-सबेरे दिल महका-महका जाती है
जीवन सलोना कर, अब कुछ कुछ तुतलाती है
पिछली यादें भुला जीवन आधार बन खो गयी
लो आज मेरी शानू एक साल की हो गयी ।।

तीस वर्षो की उदासीनता को कर दूर आयी है
इस सूने घर के वातावरण में किलकारी लाई है
कर दूर सूनापन पीढ़ी की प्रथम संतान पाई है
आशीष दादा-दादी की, सब का मन मोह रही
लो आज मेरी शानू एक साल की हो गयी ।।

आकाश को चूम लें

आ हम बढ़ें चलें, आकाश को चूम लें,
जमीन पर झूम लें, कदम नाप घूम लें।

नभ को मुट्ठी में करने की ले आशा
बढ़ चलें हम नौनिहाल कदम-कदम मिला
जलाकर दिया उम्मीदों का एक यहाँ
सुनहरे भविष्य के फूल इस राह खिला।

रुके झुके नहीं मंजिल नामालूम लें
आ हम बढ़ें चलें, आकाश को चूम लें।

किये जाएँ काम अपना बिना लोभ के
देश आगे बढे अपना यही सोच के
अपनों के लिए तो कभी जिएं नहीं हम
दूसरों के लिए जान लुटाएं यहीं हम।

पक्षी बन मुक्त अम्बर में उड़ घूम लें
आ हम बढ़ें चलें, आकाश को चूम लें,

लाल लाल

सुबह सबेरे, हाथ में मेरे
लाल लाल सूरज का गोला
गंगा से बाहर उछल यूँ बोला,
कर नैया में सवार
ले चल माँझी उस पार
जहाँ नन्ही परी करे मेरा इंतज़ार,
परी का वो खिलौना
सुन्दर सुगढ़ छौना,
नदिया किनारे
दिन भर धमाचौकड़ी में गुजारे
तभी आयी दुपहरी
सूरज तो तमतमाया गुस्से में ,
चलो बच्चों करो पढ़ाई
खूब हुई अब खिलाई
साँझ पड़े जब फिर होगा गोला लाल
तब साथ होगी चंदा की प्यारी ढाल,
तब फिर खेलेंगे कूदेंगे मौज मनाएंगे
दादी संग बैठ कहानी सुनायेंगे,

मेरी बुलबुल

ढुलमुल उलझुल सी चली आती मेरी चुलबुल
नाचती नचाती डगमगाती आती मेरी बुलबुल
गुलाबों की महक लिए
चिड़ियों की चहक लिए
झम झमा झम झम झम
खुशियों के बरसाती फूल

निखरी निखरी सी लगे आये जब पास हमारे
तन मन खिल खिल जाएं खेलें जब साथ हमारे
तेरी हँसी ज़माने का खज़ाना
सारे दुःख दर्द जाऊँ मैं भूल
ढुलमुल उलझुल सी चली आती मेरी चुलबुल
नाचती नचाती डगमगाती आती मेरी बुलबुल

मुनिया

मुनिया
तू बड़ी प्यारी
दादा की दुलारी
तेरा दादा बड़ा लाचार है
बन सकता नहीं तेरा घोड़ा
वह बहुत बीमार है
हाथ पाँव में नहीं है ताकत
फिर भी संग खेलने की बहुत चाहत
मन की यही एक पुकार है
तेरा दादा बड़ा लाचार है।

घर में एक आँगन हो
आँगन में हो फुलवारी
फुलवारी में रंग बिरंगे फूल खिलें
गेंदा, गुलाब, जूही, चमेली लाल-लाल,
पीले-पीले
छुप्पा छुप्पी खेलेंगे
तुम आगे आगे मैं पीछे-पीछे दौड़
लगाऊं
पूरा हो सपना यही एक विचार है
तेरा दादा बड़ा लाचार है ।।

सपनों में खो जाएँ

लाल हरे पीले
रंग रंगीले
सपने लेकर सोया था
बचपन की यादों में
खोया था
खेल खेल में लड़
कर घर आना
आकर माँ की गोदी
में दुबक जाना
सुबक सुबक कर
फिर रोना
माँ का आँचल लगे
तब सलोना
नैनों से जल धार जो
टपकी
रोक देती माँ की
ममता भरी थपकी
आँखों से बहते ये
मोती
लोरी के सुरों में माँ
उन्हें पिरोती
भूल सारे दुःख दर्द
सुख सपनों में खो
जाऊँ
बचपन के वो दिन
भुलाये भुला न पाऊँ |

चिड़ियाघर

कुत्ता बिल्ली हाथी घोड़े, सरपट आये दौड़े
जोकर जी ने बुलाया, अच्छा नाच नचाया।
आये बन्दर अंकल, चलाते वो सायकल
शेर सिंह अकड़ू ने, चिंघाड़ के बतलाया।
चूहा पिलपिला पिद्दी, ढीला ढाला बड़ा जिद्दी
जंगल में हुई रेस, लास्ट नंबर आया।
बड़े मज़े की बात है, करतब की रात है
बच्चों आओ ताली बजाओ, सर्कस है दिखवाया॥

जाकर चिड़िया घर, देखें सारे जानवर
पिंजरे में शेर देखो, भालू हैं ढेर देखो।
मगरमच्छ के दांत, बतखों की देखो पात
गेंडे सरताज देखो, मोर का नाच देखो।
सांपों का खेल अनोखा, नेवले से खाय धोखा
निगल जाय आदमी, वो अजगर देखो।
जिराफ की ऊँची नाक, लोमड़ी खतरनाक
ऊँठ की कूबड़ वाली, पींठ पे बैठ देखो॥

छोटे छोटे तारे

झिलमिल झिलमिल करते,
छोटे छोटे तारे,
बड़ा अजूबा ये हैं,
कितने लगते प्यारे।

दुनिया से भी ऊपर
चमके धीरे धीरे
आसमान पर मानो
चमक रहें हो हीरे।

ऊन ही ऊन

काली काली प्यारी प्यारी भेड़
बोल लाई हो कितना ऊन,
हाँजी हाँजी लायी हूँ मैं
तीन भरे थैलों को चुन चुन।

एक बैग दूँ गड़ेरिये को
दूजा बेचूं मैं सस्ते में
तीजा उस छोटे मुन्ने को
जो रहता नीचे रस्ते में।

सोनू-मोनू

सोनू और मोनू चढ़ गए पहाड़ पर
खींच कर लाने एक बाल्टी पानी
सोनू मियां गिर पड़े टूटा मुखड़ा
लुढके मोनू जी याद आई नानी।

तेज और तेज सोनू दौड़ लगाया
घर को आया दौड़ा घबरा दुबका
छुप गया बिस्तर में सर झुका कर
विनेगर और कागज पट्टी चिपका।

गिनती

एक दो,
जूते की रस्सी कसो।

तीन चार
बंद कर सारे द्वार।

पांच छः
तू उठा कर सुबह सुबह।

सात आठ,
कितने तुम्हारे ठाठ।

नौ दस,
बड़की मोटी मुर्गी बस।

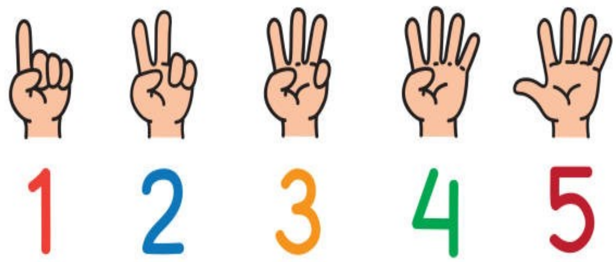

|| बच्चों गिनती सीखों , खूब पढो लिखो ||

बिल्ली मौसी

बिल्ली मौसी ताक धिना धिन
तबला बोले तक तक धिन धिन।

ढोलक बाजे ढमढम ढमढम
चूहा नाचे छमछम छमछम।

सींग हिलाकर गैया भड़की
पेड़ डाल पर चिड़िया चहकी।

चिढ़कर बंदर खीं खीं करता
पप्पी दे दे ताली हँसता।

छोटी भेड़

भेड़ एक छोटी शानू की
नाम जिसका बताया माया
धवल बरफ सी प्यारी प्यारी
उजली उजली सुन्दर काया।

यहाँ वहाँ जब जाए शानू
पीछे पीछे दौड़ी आये
में में में में गाना गाये
उछल कूद कर नाच दिखाए।

ढन-ढन

घंटी बाजे ढन-ढन ढन-ढन
चमक पड़ा है भोला बन्दर
बिल्ली मौसी   भागी   आई
डरकर गिरी कुँए के अन्दर।

मेंढक बोला ढर-ढर ढर-ढर
मौसी   साथ हमारे   आओ,
बड़े   कुँए   में   घूमो   दौड़ो
जरा किसी से मत घबराओ।

जितना   चाहो   पानी पीवो
नहीं   किसी   से   डरना है।
मैं हूँ   इस कुँए   का राजा,
ठाठ   बाठ   से   रहना है।

बिल्ली रानी

बिल्ली रानी कहाँ गयी थी

प्यारी बिल्ली रानी

दिल्ली के राजमहल गयी थी

मिलने महारानी

राजमहल में जाकर तूने

क्या करतब दिखलाया

रानी की कुर्सी के नीचे

चूहा मार भगाया ।

बोला म्याऊं ,...................

बरसा

बरसा बरसा जल्दी घर जा
बहुत हो गया मत अब तू आ

फिर और किसी दिन तू आये
नन्ही निया खेलना चाहे

बरसा बरसा जा दूर कहीं
तू मुँह अपना क्यों दिखा रही।

भोला हरिया

भोला हरिया थैला लेकर,
चला जा रहा था मेले में।
मिला राह में छोटू ग्वाला,
माखन भर मोटे थैले में।।

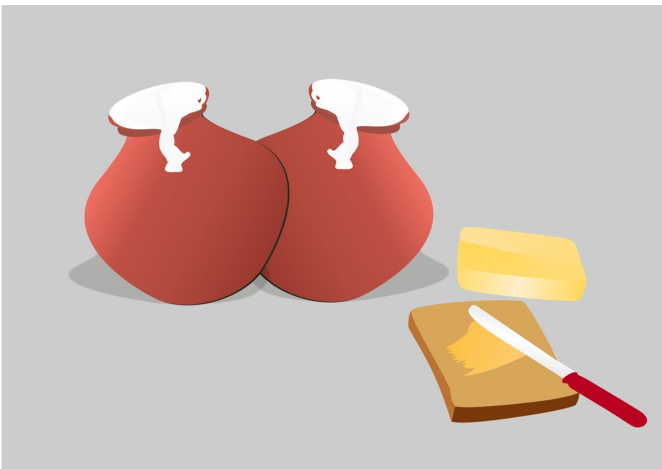

देखा मक्खन इतना सारा,
हरिया के मुँह पानी आया।।
हँस कर बोला छोटू भैया,
मक्खन दे दो मन ललचाया

गुड़िया अलबेली

कुछ छैल छबीली सी
गुड़िया अलबेली सी ।

दादा दादी का ये है खिलौना
आकाश पर ज्यूँ चंदा सोना
इतनी चंचल जैसे मृग छौना ।।

कूदती नाचती धूम मचाती
आ आ कह बिल्ली बुलाती
शोर मचाती पूरा घर उठाती
शैतान की खाला गुनगुनाती ।।

बुलबुल लाल पीली सी
कुछ छैल छबीली सी
कुछ रंग रंगीली सी ।।

अगड़म बगड़म

अगड़म बगड़म बम्बे बो,
अस्सी नब्बे पूरे सौ ।
चले बनठन कर शहर को
भालू जी चाट खाने को ।

एक नहीं दो-चार नहीं
ले रूपए पूरे आठ ।
बंदर जी की दुकान पर
देखो इनके बड़े ठाठ ।
झाल मिर्च से भरी हुई
ले खा ली इन्होने चाट ।

आंखे हुई लाल लाल
रो रो हुए ये बेहाल
भालू जी कर रहे खों खो ।
अगड़म बगड़म बम्बे बो ।

इलाहाबादी

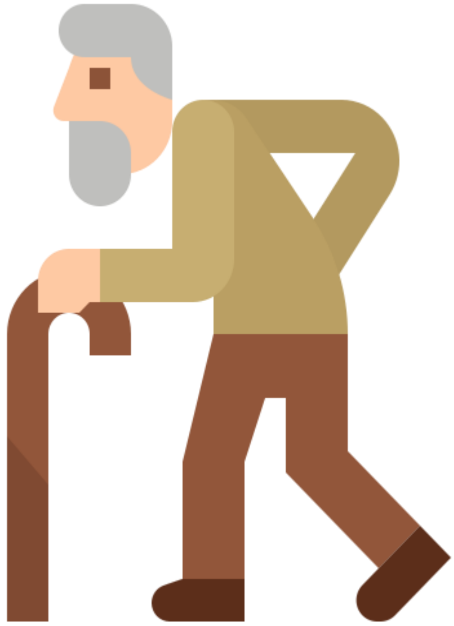

मियां बन्ने खां इलाहाबादी
कभी लड़े थे जंगे आज़ादी
चौरासी साल के जवान धंधे से थे नाई
साइड बिज़नेस में लिखते थे रुबाई
गाहे बगाहे मौका बेमौका पढ़ भी लेते थे
टाँग तोड़ रुबाई की शब्दों का जाल गढ़
भी लेते थे

जब जब बुलावा आता था बाल काटने का
नहीं चूकते थे पढ़ना रुबाई का
बाल और रुबाई के मिसरे कटते थे साथ साथ
कटाने वाला भी खुश,
काटने वाला भी खुश लगे हाथ ||

आई रेल

छुक छुक करती आई रेल
खेल खिलौने लाई रेल
छुक छुक करती आई रेल

चीर धुंध लाई उजारा
जीवन को इसने संवारा
सर्दी या गर्मी रुके ना
बरसे पानी यह झुके ना।

जीवन का अद्भुत यह खेल
छुक छुक करती आई रेल

जीवन चलने का है नाम
रेल बताती यह ही काम

बच्चों तुम भी आगे बढ़ो
कभी रुको नहीं खूब पढ़ो ।

तुम न होओगे कभी फेल
छुक छुक करती आई रेल ।

जा मुम्बई या कलकत्ता
गंतव्य तय है अलबत्ता
निर्धारित करो ***लक्ष्य*** ख़ास

पाने का उसे कर प्रयास ।

यह जीवन की ठेलम ठेल
छुक छुक करती आई रेल ।

छुकछुक रेल

छुकछुक रेल।
बच्चे मेल
बड़े धकेल।

पढ़ नहीं तो
होगा फेल।
धींगा मस्ती
रेलम पेल।

जिंदगी कम
खुशियाँ ठेल।
मेहनत सीख
निकाल तेल।

झूठ से लड़
पाप न झेल।
सच की राह
सुरभित बेल।

बरखा

बरखा आयी बरखा आयी
रिमझिम करती बरखा आयी।

गाँव में शहरों में धमाधम
खेत खलियान में झमाझम
सावन भादों झड़ी लगाई।

पानी की नन्ही बूंदें कहीं
काले मेघ हैं गरजे कहीं
कहीं मोटी धार टपकाई।

लटके झूले नीम डाल पर
सावन की तीज हर हाल पर
लड़कियाँ झूम झूम धाई।

आओ भींगे नाचें गायें
कागद की कश्ती तैरायें
गगन पर काली घटा छाई।

सूरज आँख मिचौनी करता
लो बादलों में छपता फिरता
मुट्ठी भर धूप ढूंढ लाई।

वन उपवन मेह का जोर है
मस्त हो हो नाचे मोर है
खुशियाँ दूनी हो रही भाई

बरखा आयी बरखा आयी ।

अनमोल रचनाएँ

कल्याणसिंह शेखावत

की कलम से

39 - उमा पथ, राम नगर

सोडाला, जयपुर – 302019

मो. 94613 00099/91164049

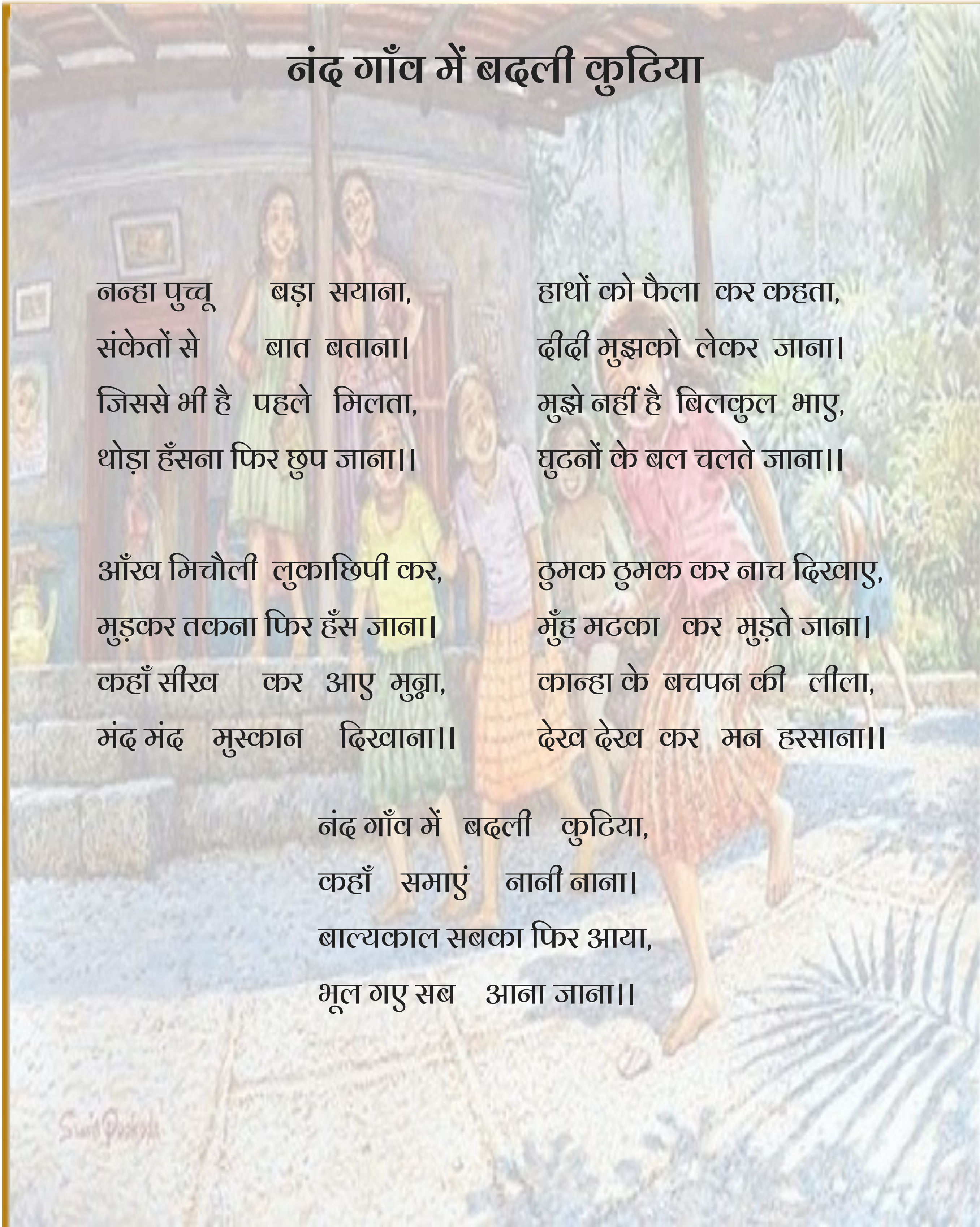

नंद गाँव में बदली कुटिया

नन्हा पुच्चू बड़ा सयाना,
संकेतों से बात बताना।
जिससे भीं है पहले मिलता,
थोड़ा हँसना फिर छुप जाना।।

हाथों को फैला कर कहता,
दीदी मुझको लेकर जाना।
मुझे नहीं है बिलकुल भाए,
घुटनों के बल चलते जाना।।

आँख मिचौली लुकाछिपी कर,
मुड़कर तकना फिर हँस जाना।
कहाँ सीख कर आए मुन्ना,
मंद मंद मुस्कान दिखाना।।

ठुमक ठुमक कर नाच दिखाए,
मुँह मटका कर मुड़ते जाना।
कान्हा के बचपन की लीला,
देख देख कर मन हरसाना।।

नंद गाँव में बदली कुटिया,
कहाँ समाएं नानी नाना।
बाल्यकाल सबका फिर आया,
भूल गए सब आना जाना।।

चल अब शाला

सुनना गुनगुन शिवी सयानी,
चलो बुलाए सबको नानी।
बिट्टू यूवी तुम भी आओ,
देर न बिलकुल हमें लगानी।।

मम्मी-पापा, दादी-दादा,
चाची-चाचा, दीदी सुनना।
झटपट अब तैयार करादो,
हमें नहीं रुकने को कहना।।

नानी के घर मजे करेंगे,
मामा, मौसी सँग खेलेंगे।
नहीं किसी से डरना होगा,
धमा चौकड़ी खूब भरेंगे।।

मगर जुलाई जब आयेगी,
मन में दुविधा बहुत भरेगी।
बीत चुकी गर्मी की छुट्टी,
चल अब शाला समझायेगी।।

तोते आए

तोते आए तोते आए
उड़ते उड़ते तोते आए।
कितना सुंदर इनका रँग है
चीं चीं करते तोते आए।।

मौसी कितने तोते आए।।
लम्बी चोंच आँख हैं छोटी
हरे रंग के तोते आए।
कंठी लाल गले में पहने

उछल पड़ी गुनगुन गोदी में
करे इशारे तोते आए।
मासी, मामा छत पर आओ
शोर मचाते तोते आए।।

देखो-देखो नाना देखो
झुंड बना कर तोते आए।
दाएँ बाएँ ऊपर नीचे
फुर फुर करते तोते आए।।

केला, आम, सेव नहीं भाएं
बस दाड़िम फल खाते तोते।
मिर्च देख कर झट ले जाते
कितने चतुर सयाने तोते।।

भालू

शोर गली में करते बालक
झबरू कालू भालू आया।
आगे आगे चले मदारी
पीछे भालू चलकर आया।।

बजा डमडमी खड़ा मदारी
बच्चों से घेरा बनवाया।
झोली रख कर डंडा लेकर
भालू को थोड़ा समझाया।।

खड़ा हो गया दो पैरों पर
एक इशारा पाकर भालू।
ठुमक ठुमक नाच दिखाए
पाँवों को उचका कर भालू।।

हँसें बजाकर बच्चे ताली
नाच रहे भालू सँग सारे।
रूपए पैसे बहुत मिलेंगे
कल फिर आना भालू प्यारे।।

इतना सुन्दर कैसे नाचा
समझ न पाया यूवी भैया।
आस पास बंदर बंदरिया
नाच रहे थे ता ता थैया।।

बंदर आया

किर्र किर्र का शोर मचाते
एक बंदरिया बंदर आए।
बड़, पीपल पर कूद फाँद कर
डाल नीम से छत पर आए।।

कनखी छत पर उड़ा रहा था
यूवी भैया खड़ा अकेला।
ये काटा फिर वो काटा का
शोर बहुत था बड़ा झमेला।।

पुच्चू को गोदी में लेकर
डरकर नीचे भगी तनीषा।
छोड़ पतंगें जल्दी आओ
घबराकर बोली नानी माँ।।

हल्ला गुल्ला हुआ जोर से
नयी सुबह का नया तराना,
आस पास बंदर बंदरिया
नाच रहे थे ता ता थैया।।

हुआ सवेरा

जाग गए हैं चिड़ी कबूतर,
सब चमगादड़ छुपे खण्डहर।
चूजे बच्चे लगे चहकने,
करते हैं पंखों को फर फर।।

छोड़ घोंसला बाहर आए,
इक दूजे से चोंच लड़ाएं।
नयी सुबह का नया तराना,
मधुर सुरों में सब मिल गाएं।।

डाली डाली देख रहे हैं,
फूल पात से खेल रहे हैं।।
खूब मचाई धमा चौकड़ी,
इक दूजे को ठेल रहे हैं।।

जागो जागो बच्चो जागो,
हुआ सवेरा आलस छोड़ो।
जाना है तुम सबको शाला,
अब जलदी से खटिया छोड़ो।।

चंदा तारे

रात रात भर जाग जाग कर
पहरा देते मिल कर सारे।
आसमान में टिम टिम करते
छोटे छोटे कितने तारे।।

अठखेली चंदा सँग करते
कभी बींच बादल छिप जाते।
चमक चमक कर नभ में सारे
बच्चों को है राह दिखाते।।

नभ में बिखरे चंदा तारे
क्या क्या बातें करते होंगे।
इतनी ऊँचाई पर जाकर
गिरने से घबराते होंगे।।

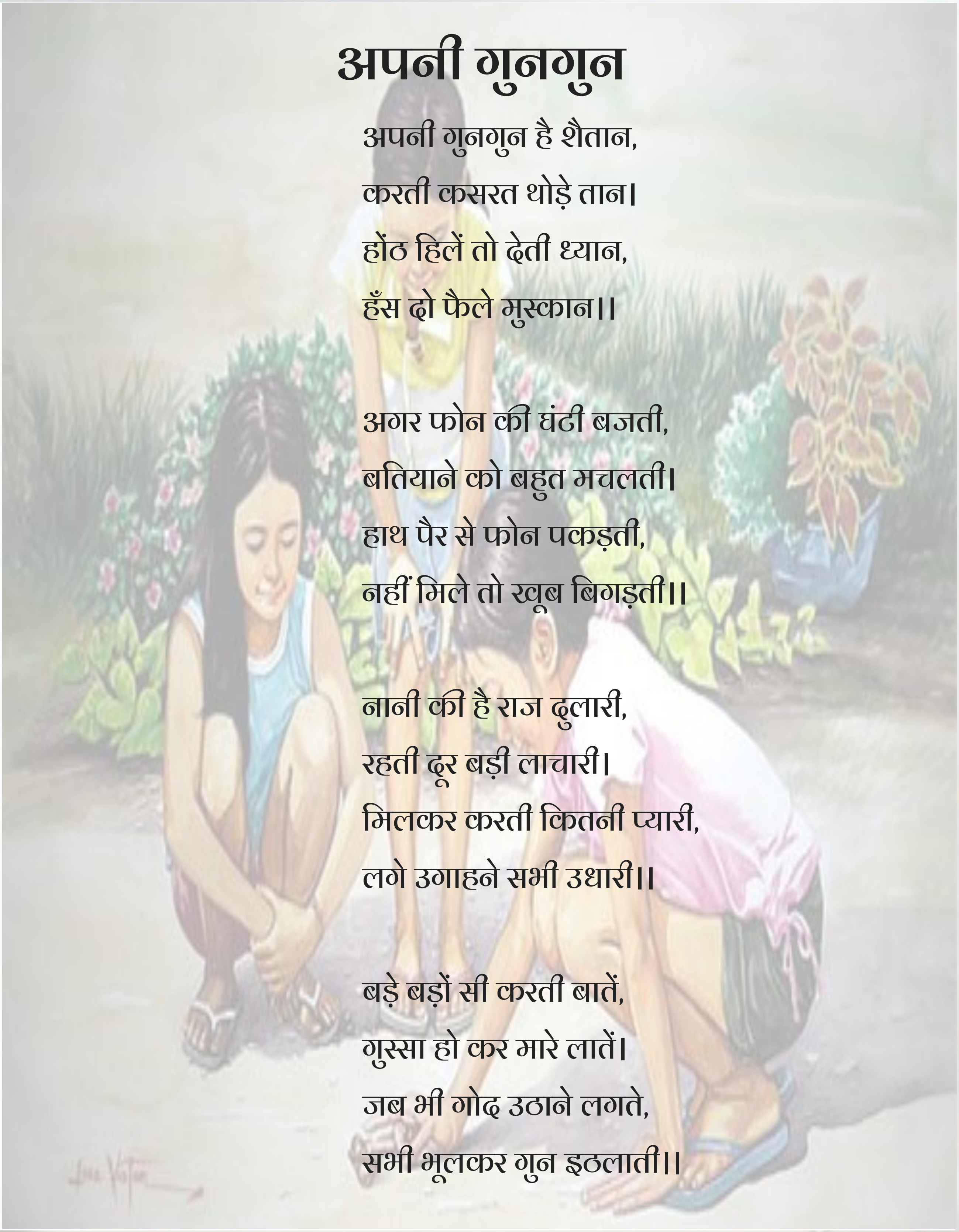

अपनी गुनगुन

अपनी गुनगुन है शैतान,
करती कसरत थोड़े तान।
होंठ हिलें तो देती ध्यान,
हँस दो फैले मुस्कान।।

अगर फोन की घंटी बजती,
बतियाने को बहुत मचलती।
हाथ पैर से फोन पकड़ती,
नहीं मिले तो खूब बिगड़ती।।

नानी की है राज दुलारी,
रहती दूर बड़ी लाचारी।
मिलकर करती कितनी प्यारी,
लगे उगाहने सभी उधारी।।

बड़े बड़ों सी करती बातें,
गुस्सा हो कर मारे लातें।
जब भी गोद उठाने लगते,
सभी भूलकर गुन इठलाती।।

पर्व दिवाली

जब अंतस उत्सव छाया हो
होठों पर नगमा आया हो
नभ के तारों की महफिल में
पावन खुशियों की महफिल में
अपनापन भाव पिरोता है
तो पर्व दिवाली होता है

जब प्रेम गीत दिल गाता हो
दुश्मन से मिल हरसाता हो
ना दंभ द्वेष के हों साए
सब हों अपने, न पराए हों
जीवन जग में रँग बोता है
तो पर्व दिवाली होता है

जब फसल खेत में महकी हो
कृषकों के मन में मस्ती हो
जन जन में हेत मचलने से
सजती गोधूली बेला से
मन सर्द ऋतु में खोता है
तो पर्व दिवाली होता है

जब मन खुश्बू से भर जाता
खुशियों से बाग चहक जाता
मौसम के गीत मचलते हों
सुर ताल बहक कर चलते हों
बहता रागों का सोता है

हाथी आया

हाथी आया हाथी आया
सूंड हिलाता हाथी आया।
धीरे धीरे आगे बढता
देखो देखो हाथी आया।।

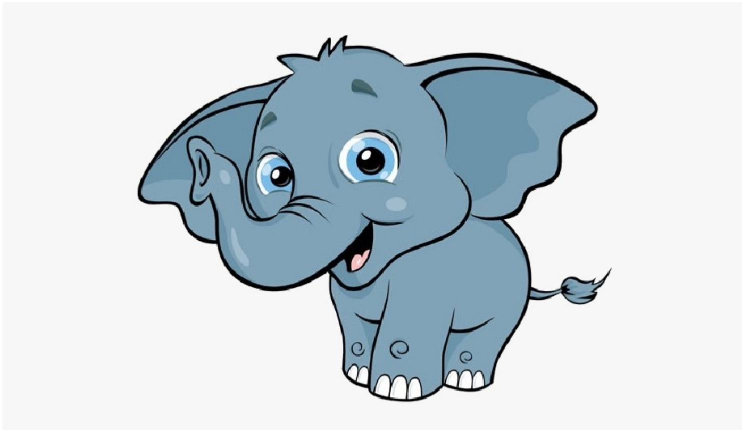

छोटी छोटी आँखों वाला
बड़े छाज से कानों वाला।
फूँक फूँक कर आगे बढता
खम्भे जैसे पावों वाला।।

कभी नदी पर पानी पीने
जल्दी जल्दी दौड़ लगाता।
कभी गली में मस्त चाल से
हल्के हल्के कदम बढाता।।

लगे भौंकने कुत्ते सारे
कौन घुस गया उनके घर में।
शांत भाव से दीवाना सा
झूम रहा है अपनी धुन में।।

घर आंगन

पुच्चू हुआ सयाना गुन्नू
बच्चों को धमकाता रे।
दड़बड़ दड़बड़ दौड़ लगाता
गाना सुंदर गाता रे।।

बड़बड़ बड़बड़ बातें करता
सबका ध्यान बँटाता रे।
आँख दिखाए धमकाए भी
मंद मंद मुस्काता रे।।

बिन पैजनिया ठुमके करता
मामा को नचवाता रे।
दीदी की पुस्तक ले भागे
मौसी को दिखलाता रे।।

शयन कक्ष में आँख बंद कर
मम्मी को बुलवाता रे।

नानी-नाना पगलाए हैं
बचपन याद दिलाता रे।
फिरै कन्हैया छमछम करता
घर आंगन महकाता रे।।

उजली धूप

रात गई सब तारे डूबे
थका थका चंदा मामा है
लाल रंग बिखरा पूरब में
अब सूरज उगने वाला है

जागो पुच्चू तुम भी जागो
सज धज कर जाना शाला है
यू वी भैया दातुन करके
बाथरूम जाने वाला है

गुनगुन दीदी बाइक लेकर
कॉलेज में जाने वाली है
शिवी नींद में बहकी बहकी
आँखों में अब भी लाली है

दूध मलाई दही परांठा
मम्मी ने है खूब सजाया
करो कलेवा बच्चो मिलकर
उसने सबको है समझाया

गयी लालिमा सूरज चमका
उजली उजली धूप खिली है
नन्हें मुन्ने सबको लेकर
पों पों करती बस निकली है

बच्चों की होली

सुनना ऐ मस्तों की टोली
आज सजी बच्चों की होली
कितना रंग रँगीला दिन है
समझ सकी ना गुन्नू भोली

भैया, दीदी, छोटू, मोटू
यह त्योहार अनोखा सबसे
बाट जोहते अद्भुत दिन की
बूढे बच्चे युवजन कबसे

रंग भरी पिचकारी लेकर
पुच्चू यूवी भाग रहे हैं
शिवी सयानी छुपकर बैठी
चुन मुन मिल ललकार रहे हैं

लाल गुलाल भींच मुट्ठी में
कन्नू कब से खड़ा द्वार पर
लक्की टुन्नू यस्सू भाई
लिए डोलची पहुँचे छत पर

आंगन छत दरवाजे भीतर
रंगों की महफिल छाई है
भाँति भाँति रंगों से भीगी
हुड़दंगी टोली आई है

ऊँच-नीच का भेद भुलाकर
आओ खेलो सब मिल होली
प्रेम प्रीति के फूल अनोखे
होठों पर हो मीठी बोली

मतदान

पहन पजामा कुर्ता टोपी
गमछा कंधे पर लटकाए।
बाबूजी पहचान पत्र ले
एक हाथ में छड़ी उठाए।।

लगे बुलाने सुबह सवेरे
आलस छोड़ नींद से जागो।
यदि लू से बचना चाहो तो
बहुत जरूरी जल्दी भागो।।

तपन, सुमन, बनवारी आओ
सुनो भवानी, नीरज भाई।
राधा, रानी, चीनू, चंचल
जल्दी जल्दी चलो कन्हाई।।

मम्मी-पापा, चाचा-चाची
भैया-भाभी, कमला ताई।
दादाजी हम साथ चलेंगे
बंटी, मुनमुन, कहे कन्हाई।।

पुच्चू, यू वी लगे मचलने
हम भी तो मतदान करेंगे।
शिवी संग गुनगुन भी दौड़ी
ठहरो हम सब साथ चलेंगे।।

सबके सब मतदाता जागो
पाँच बरस का उत्सव न्यारा।
लोकतंत्र मतदान मांगता
मत देना अधिकार हमारा।।

काले बादल

दिन भर लू के गर्म थपेड़े
बरगद, नीम, आम घबराए।
कोयल दुबक रही पत्तों में
कुहू-कुहू के गीत न गाए।।

चिड़ी, कबूतर, तोता, तितली
बाग-बगीचे सब मुरझाए।
कुँए, बावड़ी, ताल-तलैया
नदिया, पर्वत सभी बुलाए।।

बालक, बूढे करें पुकार
सूरज दादा अब जिद छोड़ो।
अब थोड़े शीतल हो जाओ
कड़क धूप से सिर मत फोड़ो।।

मुन्ना दीदी, यूवी, गुनगुन
पेड़ तलै सब दुबके बैठे।
शिवी खड़ी है सहमी-सहमी
पुच्चू राजा ऐंठे-ऐंठे।।

कहाँ छुपी हो वर्षा रानी
दर्द नहीं बच्चों का जाना।
गर्मी से आहत हैं बच्चे
अच्छा नहीं देर से आना।।

काले बादल, पीले बादल,
भूरे बादल जल भर लाओ।
धरती का तन मन सरसाने
जल्दी से पानी बरसाओ।।

मेघ तुम कहाँ छुपे

चिड़ी, कबूतर, तोता, तीतर,
इधर-उधर सब ढूंढें पानी।
पीहु-पीहु की रटन आजकल,
सुने नहीं मयूरा की वाणी।।

उड़े हवा सँग रेत हठीली,
सूख गए सब नदियां, नाले।
गाँव, खेत, खलिहान, नगर को,
भूल गए बादल मतवाले।।

यूवी, गुन्नू, मुन्ना, दीदी,
सारे मिलकर धूम मचाते।
अगर बरसती ढीठ बादली,
पुच्चू, शिवी नाचते गाते।।

आओ आओ प्यारे मेघा,
दूध मलाई तुझे खिलाएं।
खूब बहा पानी गलियों में,
हम कागज की नाव चलाएं।।

आसमान में लटक रहे हो,
या गरमी से डरे हुए हो।
भटक गए क्यों अपने पथ से,
बोल मेघ तुम कहाँ छुपे हो।।

बादल

उमड़ घुमड़ कर आए बादल
तन मन को हरसाए बादल
सूखी धर की प्यास मिटाने
पानी भरकर लाए बादल

बादल तेरा आना शुभ कर
वसुधा को सरसाना शुभ कर
रज कण को हरसाना शुभ कर
कष्ट निवारक सुख संचारक
अमृत-जल बरसाए बादल।
उमड़ घुमड़ कर आए बादल

ज्यों उत्सव छाया हो उपवन
मिला धरा को पावन जीवन
जगी चेतना जन मनभावन
पीहु-पीहु कर कुहूके मयूरा
कोयल को अति भाए बादल
उमड़ घुमड़ कर आए बादल

पल में बदल नज़ारा जाता
शीतल पवन चित हरसाता
पेड़ लता सँग गाना गाता
खिला पुष्प मुस्कान लुटाए
अद्भुत रंग दिखाए बादल
उमड़ घुमड़ कर आए बादल

सूखे झरने लगे चहकने
मृग छौने भी लगे उछलने
बूँटा बूँटा लगा महकने
नव पल्लव नव राग सुनाए
गड़ गड़ नाद बजाए बादल
उमड़ घुमड़ कर आए, बादल

चित्र -मिश्का चौधरी